ISSN:2583-8849



तितिक्षा नंदवाना

सिद्धि पुरम भीलवाड़ा रोड कांकरोली, राजसमंद

1-

यूँ ही नहीं कृष्णचूड़ गुलमोहर कहलाता हूँ
रंग और बनावट का अद्भुत संगम हूँ
धूप की प्रखर तपिश में भी खिलखिलाता
प्रकृति के अनुपम वैभव का मैं सजीव आलम हूँ।

झुलसती हुई दुपहरी में जीवन का संदेश सुनाता
लाल पीली श्वेत पंखुड़ियों में आशा जगाता
धरा के सूने आँगन का अनुपम श्रृंगार बनकर
हर थके हुए मन में नव उत्साह फैलाता

शीतल छाया थकी निगाहों को विश्राम देती
जीवन की हर साँस में नई उमंग प्राण भरती
ऋतुराज के स्वप्नों का साकार सजीव प्रतीक हूँ मैं
अग्नि-सी लालिमा लिए सृजन का अमर सार हूँ मैं।।



2-

तेरा क्या श्रृंगार करे कोई सांवरिया
तू तो स्वयं अपार अलंकृत रूप का दरिया।
नज़र मिलते ही मन हो जाये बावरा
तेरी मोहिनी सूरत देख नाच उठे मन मयूरा।
नाम तेरा लेते ही हृदय पुलकाए
तेरी ज़ुल्फ़ें जैसे सावन की काली घटाएँ।
तेरे नयनों में झलकता प्रेम का अथाह सागर
उतरे उनमें तो जग बिसराए है गिरिधर।
अधर तुम्हारे है कि कोमल गुलाब की पंखुड़ियाँ
मधुर-मधुर ऐसे मुस्काएँ जैसे धवल चाँदनियाँ।
इन पर सजी हुई मुरलिया की मीठी तान
जिसे सुन सुध बुध बिसराय सारा ब्रह्मांड।
मोर मुकुट सिर पर शोभा ऐसी कि लखि नहीं जाए
गले में वैजयंती माला अति सुंदर सुहाए।
पीताम्बर की आभा मन को रह रह लुभाए
चरण कमल पर है जग बलिहारी जाए ।।